

SHRI JAINACHARYA VIJAY RATNASUNDERSURI MAHARAJA

Shri Jainacharya Vijay Ratnasundersuri Maharaja, a jain disciple, was born on the 5th of January, 1967 in a village named `Depla' in the state of Gujarat. In the year 1967, under the guidance of Jain Aacharya Shri Bhuwanbhanu Suri Maharaja, he and his father took upon sainthood as a way of life. Following the religious institution of Jainism, he has serially achieved the titles of 'Panyas' and `Aacharya' by crossing necessary religious milestones required for these titles.

2. Shri Acharya Vijay Ratnasundersuri was born on January 05, 1948 in Depla village of Gujarat. He is a writer and a great orator. He has always been a motivating force in the spiritual, moral and ethical development of society. He has played a decisive role in bringing about spiritual — ethical awakening in the society and also guided people towards a successful, safe and happy lifestyle. Always keeping this noble social cause as an aim in life, he has authored about 300 books in Gujarati language in the last 50 years. Later a lot of these books have been translated in 10 plus languages including English, French, German, etc. His name has been included in the 'Golden book of World Records' for this magnificent achievement. Simultaneously, he has travelled thousands of kilometers on foot in northern, western and central India visiting numerous villages and cities to inspire people for a life of positivity and prosperity by means of thousands and thousands of 'Pravachans' (oratory speeches).

3. Along with highlighting the religious aspect of spirituality, Shri Acharya Vijay Ratnasundersuri has also connected it with the social, political, cultural and economic aspects. His books have also strengthened this spiritual — ethical way of life. His books like "Do Kadam Smaran Se Vismaran ki Or", "Kahi Ruko, Kabhi Ruko", “Muskan Bhari Mrityu", etc also direct the society on a similar path. His role in solving various social problems like drug rehabilitation, bring back parents from the old age homes, etc has been appreciated by the society. On the basis of these achievements, many thinkers considered his thoughts as guardian of fundamental human values of society.

4. Shri Acharya Vijay Ratnasundersuri's writing and speech positively express spiritual and thoughtful conclusions for Nation Building. By motivating values like co-existence, religious - cultural harmony, Non-Violence, love, peace and forgiveness in a diversified country like ours, he has been contributing a great deal into Nation building of India. To bring these values in the purview of law, Shri Acharya Vijay Ratnasundersuri has also made attempts by representing his thoughts in the democratic institutes like 'The Parliament'. He has also encouraged a national debate on various topics like ban on cyber pornography, ban on meat export, Rural development, value education, etc by successfully filing petitions with the 'Petition Committee' of the Rajya Sabha.



श्री जैनाचार्य विजय रत्नसुंदरसूरि महाराजा

श्री जैनाचार्य विजय रत्नसुंदरसूरि महाराजा एक जैन शिष्य हैं। वर्ष 1967 में आपने और आपके पिता ने, जैन आचार्य सूरी भुवनभानू सूरी महाराज के मार्गदर्शन में सन्यासी सन्त का जीवन गृहण कर लिया। जैन धर्म की धार्मिक रीतियों का अनुसरण करते हुए आपको "पाण्ड्याज" ओर "आचार्य" की उपाधियां दी गईं जो इन उपाधियों के लिए अपेक्षित धार्मिक मानक मान्यताओं को पालन करने के पश्चात ही दी जाती है।

2. आपका जन्म दिनांक 5 जनवरी, 1948 को गुजरात राज्य के "देपला" गांव में हुआ था। आप एक प्रख्यात लेखक और प्रवाचक हैं। आप समाज के आध्यात्मिक, नैतिक और मानव जातीय विकास में एक प्रेरक व्यक्तित्व रहे हैं। आपने समाज में आध्यात्मिक-मानवजातीय जागृति लाने में निर्णायक भूमिक निभायी है। इस महान सामाजिक उद्देश्य को अपने जीवन का लक्ष्य रखते हुए आपने विगत 50 वर्षों से गुजराती भाषा में लगभग 300 पुस्तकें लिखी है। बाद में, इन पुस्तकों में से बहुत सी पुस्तकों का अनुवाद –अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन आदि सहित 10 अन्य महत्वपूर्ण भाषाओं में किया गया है। इस महान उपलब्धि के लिए आपका नाम "गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड" में शामिल किया गया है। इसके साथ ही साथ, आपने उत्तरी, पश्चिमी और केन्द्रीय भारत के असंख्य गांवों और नगरों का भ्रमण करते हुए हजारों कि.मी. की पैदल यात्रा की है और अपने हजारों हजार 'प्रवचनों' के जरिए लोगों को सकारात्मक और समृद्धिपूर्ण जीवन जीने के लिए प्रेरित किया है।

3. आध्यात्मिकता के धार्मिक पहलू को उजागर करने के साथ ही साथ, आपने इस बात को सामिजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक मुद्दों के साथ जोड़ा है। आपकी पुस्तकों में जीवन के इस आध्यात्मिक-मानवजातीय जीवन जीने के तरीके को भी सशक्त रूप से प्रस्तुत किया गया है। आपकी "दो कदम स्मरण से विस्मरण की ओर", "कहीं रूको, कभी रूको," "मुस्कान भरती मृत्यु" आदि पुस्तकें समाज को इसी रास्ते पर चलने की ओर प्रेरित करती हैं। नशे की लत से ग्रसित व्यक्तियों के पुनर्वास, अपने माता-पिता को वृद्धाश्रमों से वापस लाने जैसी विभिन्न सामाजिक समस्याओं को सुलझाने में आपकी भूमिका को समाज में अत्यधिक सराहा गया है। इन उपलब्धियों के आधार पर, अनेक विचारकों ने आपके विचारों को समाज के मूलभूत मानवीय मूल्यों का पोषक माना है।

4. आपकी लेखनी और प्रवचनों में राष्ट्र निर्माण के दिव्य आध्यात्मिक और विचारपूर्ण निर्णय प्रस्फुटित होते है। हमारे देश की विविधतापूर्ण संस्कृति में सह-अस्तित्व, धार्मिक-सांस्कृतिक सौहार्द, अहिंसा, प्रेम, शांति और क्षमा जैसे मूल्यों के प्रति लोगों को प्रेरित करते हुए आपने भारत के राष्ट्र निर्माण की दिशा में महान योगदान दिया है। इस मूल्यों को कानून के दायरे में लाने के लिए, आपने संसद जैसी लोकतांत्रिक संस्थाओ में अपने विचारों को रखने का भी प्रयास किया है। आपने राज्य सभा की "याचिका समिति" के समक्ष सफल याचिकाएं दायर करके साइबर पोर्नोग्राफी पर निषेध, मांस के निर्यात पर निषेध, ग्रामीण विकास, मूल्यपरक शिक्षा आदि जैसे विभिन्न विषयों पर राष्ट्रीय चर्चा करने के लिए भी प्रोत्साहित किया है।